Geographical Significance of the Himalayas

UNIT-2

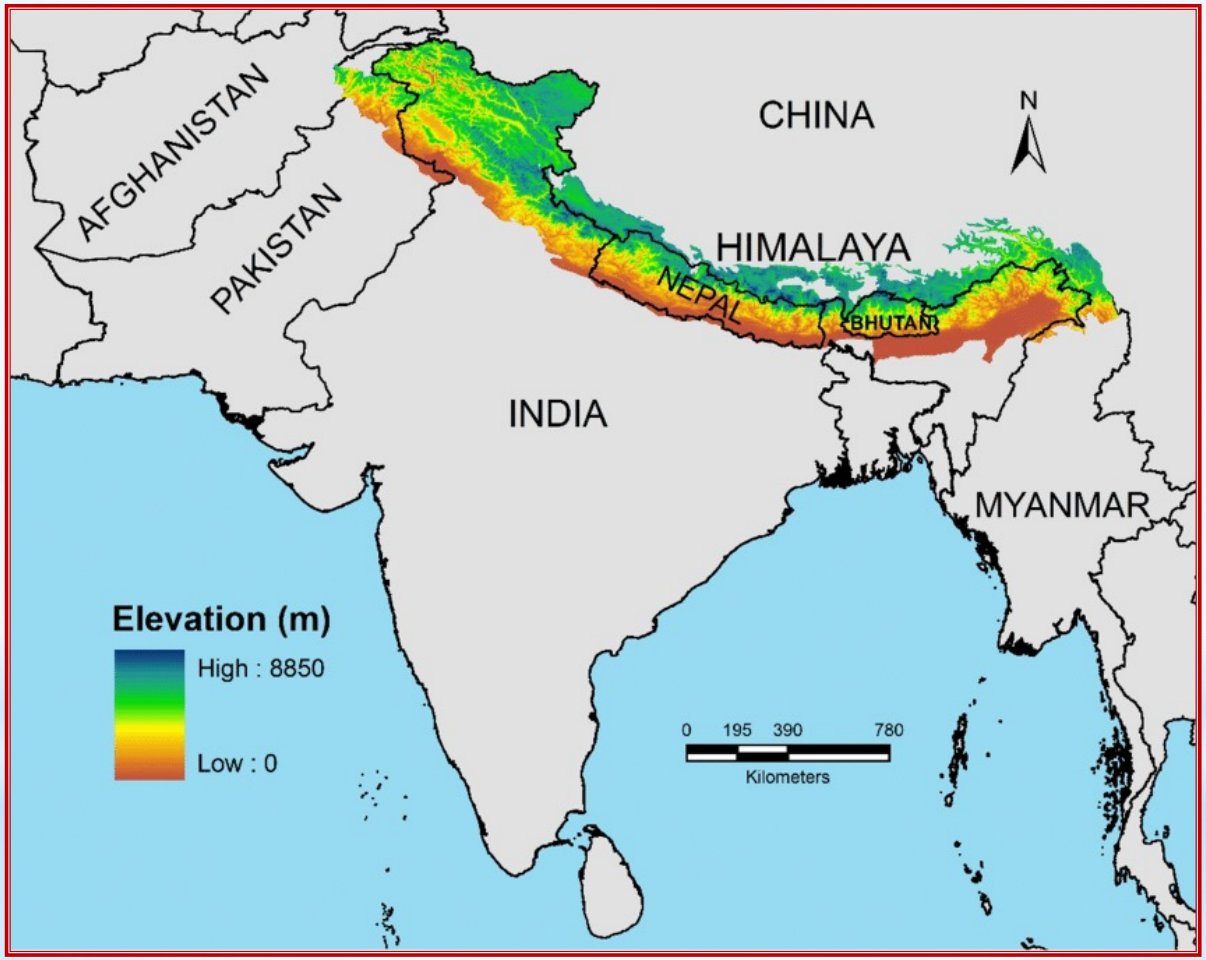

DR. JAGDISH CHAND
Asst. Prof. Geography
Govt. College Sangrah

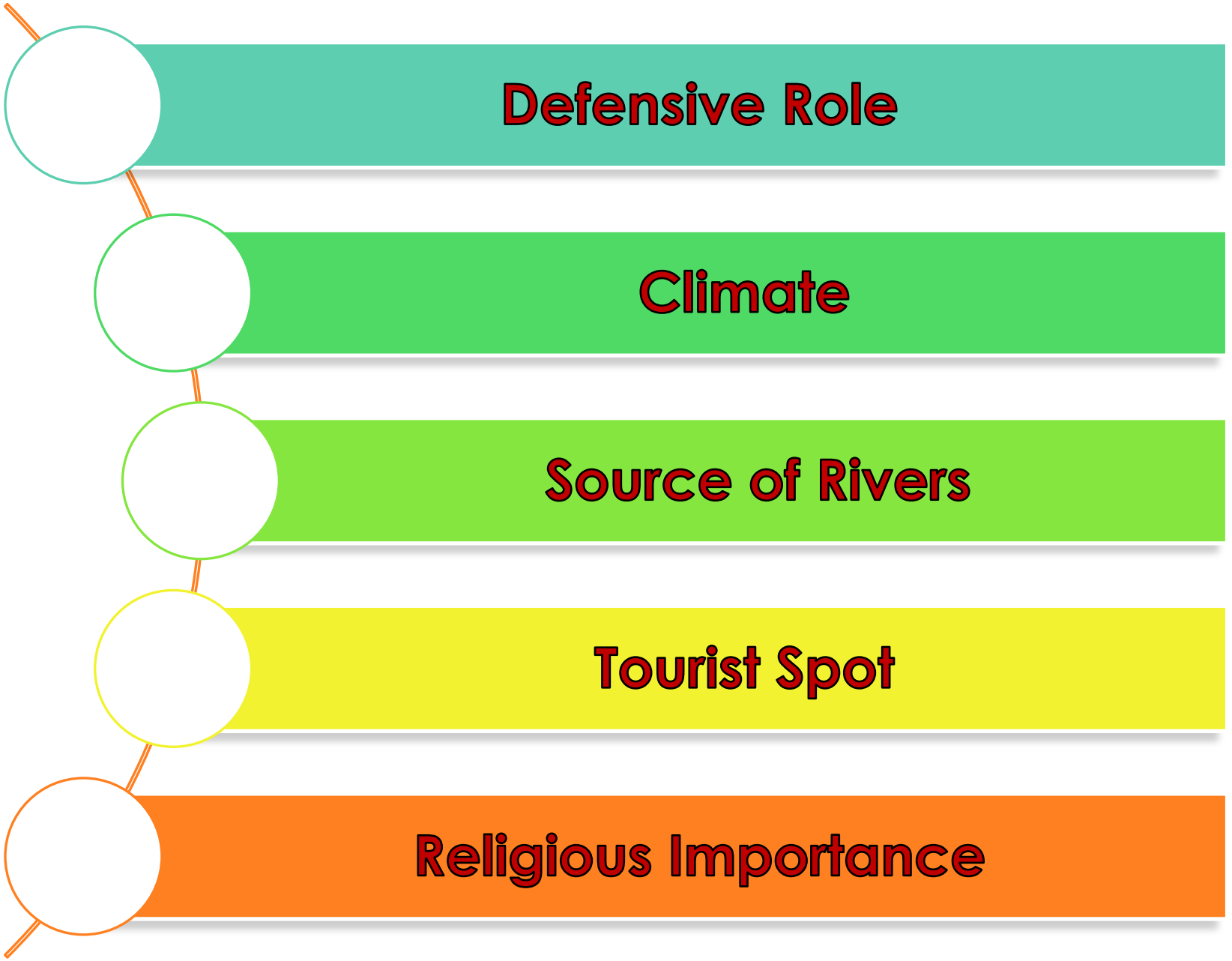
Defensive Role
Climate
Source of Rivers
Tourist Spot
Religious Importance

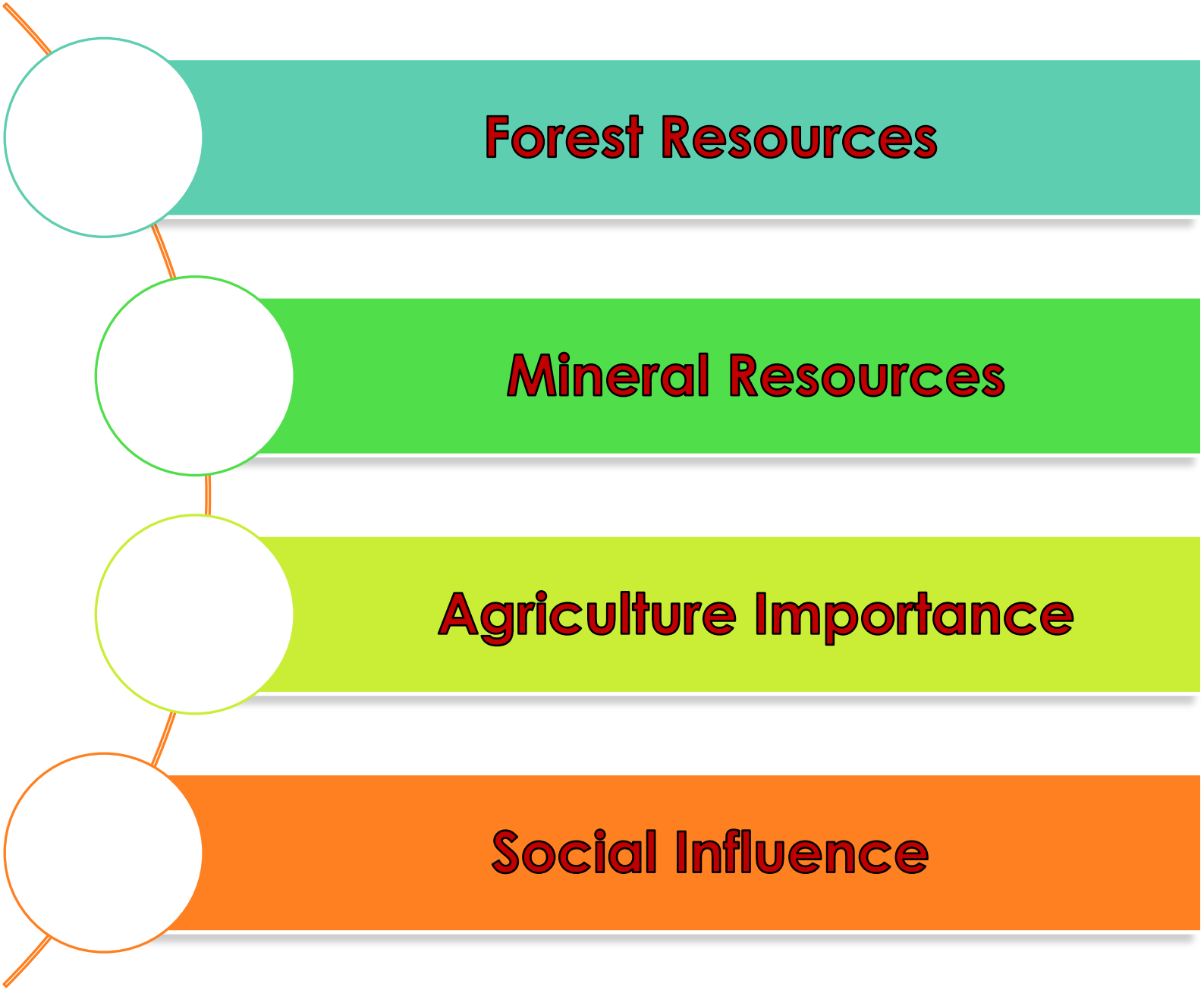
Forest Resources
Mineral Resources
Agriculture Importance
Social Influence

Geographical Significance of the Himalayas

- Himalayas intercept the Monsoon winds and cause rainfall over the greater part of the country.
- Major north Indian rivers owe their origin to the glaciers of the high Himalaya.
- The vast Indo-Gangetic plains have been formed by the deposition of sediments brought down by the Indus, Ganga, Brahmaputra and their innumerable tributaries.
- The Himalayan forests support a number of forest-based economic activities like timber trade.
- Development of tourism industry is a major economic activity in the Himalayas.

jagdishgeo@gmail.com

हिमालय का भौगोलिक महत्व

- ✓ हिमालय मानसूनी हवाओं को बाधित करता है और देश के बड़े हिस्से में वर्षा का कारण बनता है।
- ✓ प्रमुख उत्तर भारतीय नदियों का उद्गम उच्च हिमालय के ग्लेशियरों से हुआ है।
- ✓ विशाल इंडो-गंगा के मैदानों का निर्माण सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र और उनकी असंख्य सहायक नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के जमाव से हुआ है।
- ✓ हिमालय के जंगल कई प्रकार की वन आधारित आर्थिक गतिविधियों का समर्थन करते हैं जैसे लकड़ी का व्यापार।
- ✓ पर्यटन उद्योग का विकास हिमालय में एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि है।

jagdishrea@gmail.com

- Himalayas provide favourable terrain for development of hydro- electricity.

- Cultivation of orchard crops like apples and oranges and cultivation of crops like tea and saffron are the major economic activities in the Himalayas.

- Many medicinal plants and herbs grow in these mountains.

- Strategic significance : acts as a natural frontier of India with other countries (China, Pakistan, Afghanistan).

- Agricultural significance : rivers from Himalayas deposits a lot of sediment on its foothold, from which are formed India's most fertile agricultural grounds known as Northern plains.

jagdishgeo@gmail.com

- ✓ हिमालय जल विद्युत के विकास के लिए अनुकूल क्षेत्र प्रदान करता है।

- ✓ सेब और संतरे जैसी बाग फसलों की खेती और चाय और केसर जैसी फसलों की खेती हिमालय में प्रमुख आर्थिक गतिविधियां हैं।

- ✓ इन पहाड़ों में कई औषधीय पौधे और जड़ी-बूटियाँ उगती हैं।

- ✓ सामरिक महत्व: अन्य देशों (चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान) के साथ भारत के एक स्वाभाविक सीमा के रूप में कार्य करता है।

- ✓ कृषि महत्व: हिमालय की नदियाँ अपनी तलहटी पर बहुत अधिक तलछट जमा करती हैं, जहाँ से भारत के सबसे उपजाऊ कृषि मैदान का निर्माण होता है जिसे उत्तरी मैदान कहा जाता है।

jagdishgeo@gmail.com

हिमालय पर्वत का महत्त्व (Importance of the Himalayas)

सरचना में हिमालयन भूखण्ड का विशेष स्थान है। इस विशाल पर्वतमाला का भारत की भौतिक या सामाजिक व्यवस्था को निर्धारित करने में विशेष योगदान है।

- **रक्षात्मक भूमिका (The Defensive Role of Himalaya)-**

  हिमालय भारत के लिए एक रक्षात्मक दीवार का कार्य करता है। सबसे पहले तो ये साईबेरिया तथा रूस से आना रोकता है। यदि हिमालय न होता तो सर्म्पूण भारत एक ठण्डा मरुस्थलीय भू-भाग है। सबसे पहले तो ये साईबेरिया तथा रूस से आने वाले ठंडी पवनों को भारत में आने से हाता तो सर्म्पूण भारत एक ठण्डा मरुस्थलीय भू-भाग होता। दूसरे उत्तर की ओर से आने वाले विदेशी आक्रमणकारियों के लिए भी हिमालय अवरोधक का कार्य करता है ।

jagdishgeo@gmail.com

❑**मौसम पर प्रभाव (Impact on Climate)-** हिमालय पर्वत का भारतीय जलवायु को निर्धारित करने में पूण योगदान है। हिमालय की बर्फीली चोटियां उत्तरी भारत की आर्द्रता तथा तापमान को प्रभावित करती है। पवनों को हिमालयन श्रेणियां अपनी अधिक ऊंचाई के कारण रोक कर वर्षा करने में सहायक सिद्ध होती हैं । यहां पर पर्वतीय ढालों पर होने वाली भारी वर्षा, जल के साथ असंख्य झरनों के रूप में बहुत-सी नदियों को जन्म देती है। हिमालय श्रेणियों के कारण ऊपरी वायु प्रवाह या जेटस्ट्रीम भी प्रभावित होता है। जेट प्रवाह इन पर्वतीय श्रेणियों के कारण दो भागों में विभाजित हो जाते हैं जिसका भारतीय मानसन प्रक्रिया को निर्धारित करने में विशेष योगदान है।

jagdishgeo@gmail.com

❑**नदियों का उद्गम स्थल (Origin of Rivers)**-हिमालयन पर्वत श्रेणियां बहुत-सी सदाबहार नदियों का उद्गम स्थल है। हिमालयन नदियां हिमनदियों के उद्गम स्थल होने के कारण सारा साल जल की आर्पूति करती रहती हैं। इन नदियों का जल देश के आर्थिक विकास में विशेष स्थान रखता है। नदियां एक ओर तो अपने साथ बहाकर हिमालय से उपजाऊ मिट्टियां लाती हैं तथा दूसरी ओर सिंचाई के लिए भी इन नदियों के जल का प्रयोग होता है। तीसरे इन नदियों पर बांध बनाकर सस्ती जल विद्युत पैदा की जाती है। हिमालयन क्षेत्र में सदाबहार नदियों के अस्तित्व के कारण जल विद्युत् विकास की अपार संभावनाएं विद्यमान हैं।

jagdishgeo@gmail.com

❑ **पर्यटक स्थल (Tourist Resorts)-** हिमालय के हिमाच्छादित शिखरों और सुन्दर दृश्यों के कारण इन पर्वतों का महत्त्व यात्रियों, पर्यटकों और अन्वेषकों के लिए बहुत बढ़ गया है । ग्रीष्मकाल में उपयुक्त जलवायु के कारण यहां अनेक पर्यटन स्थल विकसित हुए हैं। शिमला, कुल्लू, मनाली, कांगड़ा, नैनीताल, मसूरी, देहरादून, चकराता, डलहौजी, चम्बा, मुक्तेश्वर, अलमोड़ा, वनीखेत, कसौली, अमरनाथ, श्रीनगर, दार्जिलिंग, पहलगांव आदि ऐसे ही सौर्न्दय पूर्ण स्थल हैं । आने वाले समय में यहां पर और अधिक पर्यटक स्थल विकसित होने की सम्भावना है। यहां पर्यटक स्थलों के विकास के लिए अपार सम्भावनाएं विद्यमान हैं।

jagdishgeo@gmail.com

❑ **धार्मिक स्थलों की महत्त्वता का केन्द्र (Centre of Importance of Religious Places)-** हिमालय की धार्मिक दृष्टि से बहुत अधिक महत्त्वता है। पुराणों में हिमालय को देवतारूप माना गया है। इसी कारण यहां अनेक तीर्थ स्थलों का उदय हुआ है। इसी पर्वत श्रेणी में कैलाश, अमरनाथ, मानसरोवर, केदारनाथ, बद्रीनाथ, वैष्णो देवी, ज्वालामुखी, तारादेवी, देवप्रयाग, विष्णुप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग, हरिद्वार, उत्तरकाशी आदि प्रमुख धार्मिक तथा तीर्थ स्थल हैं । हिन्दुओं के लिए इन तीर्थ स्थलों का विशेष महत्त्व है, जो मानवीय आकर्षण के मुख्य केन्द्र बिन्दु हैं । यह सभी धार्मिक स्थल पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वर्पूण स्थल हैं।

jaglishgeo@gmail.com

❑**वन संसाधन (Forest Resources)-** जलवायु की विभिन्नता और ऊँचाई के कारण हिमालय पर्वत पर विभिन्न प्रकार की वनस्पति पाई जाती है । देवदार, चीड़, स्प्रूस, बर्च, लर्च, शहतूत, मैपल, एल्डर आदि यहां के प्रमुख वृक्ष हैं । इनके कई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष लाभ हैं। यहां अनेक प्रकार की जड़ी-बूटियां भी मिलती हैं। परन्तु इन वनों का अत्यधिक शोषण होने के कारण इनके पर्यावरण सन्तुलन (Ecological Balance) को अब ध्यान में रखा जा रहा है। परन्तु इसके बावजूद हिमालय से कछ ऐसे पर्दाथ प्राप्त होते हैं, जो देश के अन्य भागों में उपलब्ध नहीं होते। इस प्रकार इन वनों के माध्यम से बहुत से लोगों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त हो रहा है।

pradiskgeo@gmail.com

❑**खनिज संसाधन (Mineral Resources)-** हिमालय पर्वत अनेक धातुओं का भण्डार है अर्थात् यहां अनेक प्रकार की धातुएं तथा खनिज पर्दाथ पाए जाते हैं जिनमें तांबा, पैट्रोलियम, सीसा, स्लेट आदि प्रमुख हैं, परन्तु परिवहन सविधा के अभाव के कारण इनका पूण रूप से दोहन नहीं हो पाया है। असम में तेल. भटान एवं सिक्किम में ताम्बा अस्यक व कोयले के भण्डार पाए गए हैं। इसके अतिरिक्त यहां पर खनिज खनन उत्पादन लागत दक्षिणी भारत से काफी अधिक आती है जिसके कारण बड़े पैमाने पर खनिज खनन कार्य सम्भव नहीं हो पाया है। परन्तु भवन निर्माण से सम्बन्धित विभिन्न खनिजों का व्यापक रूप से खनन किया गया है।

jagdishpa@gmail.com

❑**कृषि संसाधन (Agricultural Resources)-** लघु हिमालयन श्रेणी में असम से लेकर हिमाचल प्रदेश तक चाय और फलों का उत्पादन किया जाता है। यहां पर जहां कहीं समतल भूमि मिल जाती है वहां चावल, मिर्च, अदरक, मक्का गेहूँ और आलू की खेती की जाती है । यहां पर बहुत-सी हरी-भरी चरागाहें हैं जो चलवासी चरावाहों जैसे गद्दी तथा गजरों को आजीविका प्रदान करती है। यदि हिमालय की चरागाहों का वैज्ञानिक ढंग से उपयोग किया जाए तो यह दुग्ध उद्योग के लिए प्रमुख केन्द्र बन सकते हैं। खाद्यान्नों के अतिरिक्त बागवानी के लिए। महत्त्व है।

jaybishop@gmail.com

❑**सामाजिक प्रभाव (Social Influence)**-हिमालय का देश के लिए जहा, इसकी भौगोलिक पृथक्ता ने यहां के समाज को एक विशेष प्रारूप प्रदान किया है । यह साधनों का विकास हुआ है, परन्तु इसके बावजूद हिमालय के विभिन्न क्षेत्र मुख्य विकास हैं तथा बाहरी दुनिया के साथ उनका सर्म्पक भी भौतिक एवं जलवायु अवरोधों के कारण भू-भाग की अपनी ही सामाजिक तथा सांस्कृतिक पहचान है । जो देश की सामाजिक व्यवस्था यहां के निवासी ईमानदार, सीधे-सादे तथा एकान्त में रहना पसन्द करते हैं।

jagatsingea@gmail.com

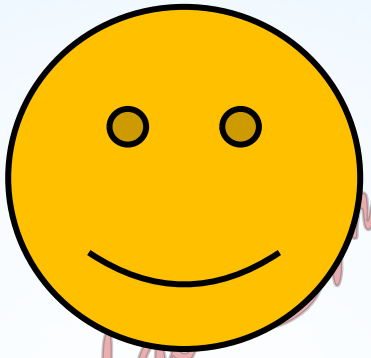

Thank YOU